

---

# Shri Yugma Panchashloki

श्रीयुगमपञ्चश्लोकी

## Document Information

---

Text title : Shri Yugma Panchashloki

File name : yugmapanchashlokI.itx

Category : vishhnu, nimbArkAchArya, krishna, panchaka

Location : doc\_vishhnu

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 28, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Yugma Panchashloki

---

### श्रीयुग्मपञ्चश्लोकी

---



श्रीकुञ्जमध्ये परिगम्यमाणं वृन्दावने द्रिव्यधरासुशोभम् ।

सभीगार्शैश्चारु सुसेव्यमानं राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम् ॥ १ ॥

वृन्दावन् की द्रिव्य अवनी पर अतिशय सुशोभित श्रीकुञ्ज के मध्य पधारते डुअे अेवं सभी सडयरी आदि के द्वारा भली प्रकार से सेवित है अैसे भगवान् श्रीराधामुकुन्द को प्रतिदिन प्रणाम करते हैं ॥ १ ॥

आनन्दकेन्द्रं प्रजगोपपूज्यं गोवृन्दपृष्ठे मुरलीधरञ्च ।

अशेषदेवैः समुपासनीयं राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम् ॥ २ ॥

आनन्द के अेकमात्र अधिष्ठान प्रजस्थ गोपसमूहों से पूजित तथा अगणित गोमाताओं के पीछे-पीछे पधारते डुअे मुरली को धारण किये डुअे असङ्ख्य देवों के द्वारा जिनकी उपासना की जाती है अैसे श्रीराधामुकुन्द भगवान् को अडर्निश प्रणाम करते हैं ॥ २ ॥

मुनीन्द्रवृन्दैरभिवन्दनीयं कदम्बकुञ्जाङ्गणराजमानम् ।

पुराण-तन्त्रागमयारुवार्थं राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम् ॥ ३ ॥

ऋषि-मुनियों के द्वारा जिनकी वन्दना की जाती है जो

कदम्ब कुञ्ज के प्राङ्गण में विराजमान अेवं पुराण तन्त्रादि के द्वारा जिनका वर्णन किया जाता है अेवंविध श्रीराधामुकुन्द भगवान् को नित्यशः प्रणाम समर्पित करते हैं ॥ ३ ॥

कलिन्दजाकूलविडारशीलमशेषकल्याणगुणैकसिन्धुम् ।

वेणुकवाणन्तं प्रजवल्लभञ्च राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम् ॥ ४ ॥

श्रीयमुनाञ्च के तट पर विडार करते डुअे तथा अनन्त कल्याण गुणगणसागर अेवं वंशी को बजाते डुअे प्रजवल्लभ श्रीराधामुकुन्द भगवान् को प्रतिपल प्रणाम करते हैं ॥ ४ ॥

मायूरपिच्छच्छविशोभमानं श्रीरासलीलानरिन्त्यमाणम् ।

सभीसमूहैरभिवन्दनीयं राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम् ॥ ५ ॥

सुन्दर मोर पङ्ख से सुशोभित अेवं श्रीरासलीला में सुन्दर

नृत्य करते लुये सभ्नीवृन्दों के द्वारा जिनकी वन्दना की जाती है जैसे श्रीराधामुकुन्द भगवान् को अनेकशः प्रणाम करते हैं ॥ ५ ॥


श्रीयुगमपञ्चश्लोकी श्रीयुगमभक्तिसम्प्रदा ।  
राधासर्वेश्वराद्यैर्न शरणात्तेन निर्मिता ॥ ६ ॥

श्रीराधाकृष्ण भगवान् की यह पञ्चश्लोकी जो उन्हीं की पराभक्ति को देने वाली तथा उन्हीं की कृपा के द्वारा प्राप्ति पूर्वक प्रस्तुत है ॥ ५ ॥


इति श्रीयुगमपञ्चश्लोकी समाप्ता ।

Proofread by Mohan Chettoor

---

——  
*Shri Yugma Panchashloki*

pdf was typeset on January 28, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

